ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 327-329

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

गया क्षेत्र का इतिहास : एक अध्ययन

मनोज कुमार
शोधार्थी, प्राचीन इतिहास, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार) भारत।

Received- 19.11.2019, Revised- 28.11.2019, Accepted - 01.12.2019 E-mail: - drbrajeshkumarpandey@gmail.com

सारांश : ***बिहार और झारखण्ड की सीमा और फल्गु नदी के तट पर बसा गया बिहार प्रांत का दूसरा बड़ा शहर है। वाराणसी की तरह गया की प्रसिद्धि भी एक मुख्य धार्मिक नगरी के रूप में की जाती है। पितृपक्ष के अवसर पर यहाँ हजारों श्रद्धालु पिंडदान करने आते हैं। गया सड़क रेल और वायुमार्ग द्वारा पूरे भारत में अच्छी तरह से जुड़ा है। नवनिर्मित गया अर्न्तराष्ट्रीय हवाई अड्डा द्वारा यह थाइलैण्ड से भी अच्छी तरह से जुड़ा है। गया से 17 किमी0 की दूरी पर बोधगया स्थित है जहाँ बोधिवृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। गया शहर बोधगया से 13 किमी0 की दूरी पर उत्तर में तथा राजधानी पटना से 100 किमी0 दक्षिण में स्थित है। गर्मी के दिनों में यहाँ काफी गर्मी पड़ती है तथा ठंड के दिनों में औसत ठंड भी पड़ता है और मानसून का यहाँ के मौसम पर व्यापक असर होता है। यह शहर शिक्षा के क्षेत्र में भी आगे है। यहाँ अनेक स्कूल, कॉलेज स्थित हैं तथा मगध विश्वविद्यालय, बोधगया भी स्थित है। यह स्थल बुद्धिस्ट पर्यटकों के साथ–साथ अन्य भारतीयों का आकर्षक का केन्द्र है।***

कुंजीभूत शब्द– वैष्णव भक्ति, सगुणात्मक, विग्रह, कल्पना, नीलोत्पल वर्ण, चतुर्भुजधारी, पुण्डरीकाक्ष, अंधकार।

गया बिहार के महत्वपूर्ण तीर्थ स्थानों में से एक है। यह शहर खासकर हिन्दू तीर्थ यात्रियों के लिए काफी प्रसिद्ध है। यहाँ का विष्णुपद मंदिर पर्यटकों के बीच लोकप्रिय है। पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु के पॉव के निशान पर इस मंदिर का निर्माण कराया गया है। हिन्दू धर्म में इस मंदिर को अहम स्थान प्राप्त है। गया पितृदान के लिए भी प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि फल्गु नदी के तट पर पिण्डदान करने से मृत व्यक्ति को बैकुण्ठ की प्राप्ति होती है।

गया मध्य बिहार का एक महत्वपूर्ण शहर है, जो फल्गु नदी के तट पर स्थित है। यह बोधगया से 13 किमी0 उत्तर तथा राजधानी पटना से 100 किमी0 दक्षिण स्थित है। यहाँ का मौसम मिलाजुला है। गर्मी के दिनों में काफी गर्मी पड़ती है और ठण्ड के दिनों में औसत सर्दी होती है। मानसून का भी यहाँ के मौसम पर व्यापक असर होता है। लेकिन वर्षा ऋतु में यहाँ का दृश्य काफी रोचक होता है।

कहा जाता है कि गयासुर नामक दैत्य का वध करते समय भगवान विष्णु के पदचिन्ह् यहाँ पड़े थे। जो आज भी विष्णुपद मंदिर में देखे जा सकते है। मुक्तिधाम के रूप में प्रसिद्ध गया (तीर्थ) को केवल गया न कह कर आदरपूर्वक "गयाजी" कहा जाता है। गया का उल्लेख महाकाव्य रामायण में भी मिलता है। गया मौर्य काल में एक महत्वपूर्ण नगर था। खुदाई के दौरान सम्राट अशोक से संबंधित आदेश पत्र पाया गया है मध्यकाल में बिहार मुगल सम्राटों के अधीन था। मुगलकाल के पतन के उपरांत गया पर अंग्रेजों ने राज किया। 1787 में होल्कर वंश की (बुंलेलखण्ड) साम्राज्ञी महारानी अहिल्याबाई ने विष्णुपद मंदिर का पुनर्निर्माण कराया था। मेगास्थनीज की इण्डिका, फाह्यान तथा ह्वेनसांग के यात्रा वर्णन में गया का एक समृद्ध धर्म क्षेत्र के रूप में वर्णन है।

बिहार के गया में भगवान विष्णु के पदचिन्हों पर मंदिर बना है जिसे विष्णुपद मंदिर कहा जाता है। पितृपक्ष के अवसर पर यहाँ श्रद्धालुओं की काफी भीड़ जुटती है। इसे धर्मशिला के नाम से भी जाना जाता है ऐसा भी मान्यता है कि पितरों के तर्पण के पश्चात् इस मंदिर में भगवान विष्णु के चरणों के दर्शन करने से समस्त दुखों का नाश होता है एवं पूर्वज पुण्यलोक को प्राप्त करते है। इन पदचिन्हों का श्रृंगार रक्त चंदन से किया जाता है इस पर गदा, चक्र शंख आदि अंकित किए जाते है। यह परम्परा भी काफी पुरानी बताई जाती है जो कि मंदिर में अनेक वर्षों से की जा रही हैं। फल्गु नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित यह मंदिर श्रद्धालुओं के अलावा पर्यटकों के बीच काफी लोकप्रिय है।

विष्णुपद मंदिर में भगवान विष्णु का चरण चिन्ह ऋषि मरिचि की पत्नी माता धर्मवता की शिला पर है। राक्षस गयासुर को स्थिर करने के लिए धर्मपुरी में माता ध र्मवता शिला को लाया गया था। मंदिर में विष्णुपद का साक्षात दर्शन कर सकते है। विष्णु पद मंदिर की ऊँचाई

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

करीब सौ फुट है। सभा मंडप में 44 पीलर है। 54 वेदियों में से 19 वेदि विष्णुपद में ही है। जहाँ पर पितरों के मुक्ति के लिए पिंडदान होता है। यहाँ भगवान विष्णु के चरण चिन्ह के स्पर्श से ही मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाते है। विष्णुपद मंदिर के शीर्ष पर 50 किलो सोने के कलश और 50 किलोग्राम सोने की ध्वजा लगी है। गर्भगृह में 50 किलोग्राम चांदी का अश्टपटल है जिसके अंदर भगवान विष्णु का चरण पादुका विराजमान है। यह मंदिर 30 किमी0 ऊँचा है। जिसमें 8 खम्भा है। इन खम्भों पर चाँदी की परतें चढ़ाई हुई है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु के 40 किमी0 लम्बे पाँव के निशान है।

रामानुज मठ (भोरी):– स्वामी धरणीधराचार्य स्थापित भोरी का वैष्णव मठ वैदिक शिक्षा तथा हिन्दू आस्था का प्रमुख केन्द्र है।

जामा मस्जिदः– एक जामा मस्जिद गया में भी है, जो बोधगया मंदिर के पीछे है। यह तकरीबन 200 साल पुरानी है।

बानावर (बराबर) पहाड़ः– गया से लगभग 20 किमी0 उत्तर बेलागंज से 10 किमी0 पूरब में स्थित है। इसके ऊपर भगवान शिव का मंदिर है जहाँ हर वर्ष हजारों श्रद्धालु सावन के महीने में जल चढ़ाते है कहते है इस मंदिर को बानासुर ने बनवाया था। पुनः सम्राट अशोक ने मरम्मत करवाया। इसके नीचे सतघरवा की गुफा है, जो प्राचीन स्थापत्य कला का नमूना है। इसके अतिरिक्त एक मार्ग गया से लगभग 30 किमी0 उत्तर मखदुमपुर से भी है। इस पर जाने हेतु पातालगंगा, हथियाबोर और बावनसीढ़ी तीन मार्ग है, जो क्रमशः दक्षिण पश्चिम ओर से है, पूरब में फल्गु नदी है।

प्राचीन एवं अद्भूत शिव मंदिर (चोवार गाँव):– चोवार गया शहर से 35 किमी0 पूर्व में एक गाँव है। जो कि अपने आप में बहुत ही अद्भूत है, इस गाँव में एक बहुत ही प्राचीन शिव मंदिर है, जहाँ सैकड़ों श्रद्धालु बाबा बालेश्वरनाथ के ऊपर जल चढ़ाते है पर आजतक ये जल कहाँ जाता है कुछ पता नहीं चलता है इसके पीछे के कारण किसी को नहीं पता चला। लगभग हजारों सालों से ये चमत्कार की जाँच करने आये सैकड़ों वैज्ञानिकों ने भी ये दावा किया है कि ये भगवान शिव का चमत्कार है। इसी गाँव में कुछ सालों पहले सड़क निर्माण के दौरान यहाँ एक बहुत ही बड़ा घड़ा निकला जिसमें हजारों शुद्ध चाँदी के सिक्के निकले थे। आज भी इस गाँव से अष्टधातु की अनेक मूर्तियाँ शिव मंदिर में देखने को मिलता है।

सूर्य मंदिरः– सूर्य मंदिर प्रसिद्ध विष्णुपद मंदिर के 20 किमी0 उत्तर रेलवे स्टेशन से 3 किमी0 दूर स्थित है। भगवान सूर्य को समर्पित यह मंदिर सोन नदी के किनारे स्थित है। दीपावली के छः दिन बाद बिहार के लोकप्रिय पर्व छठ के अवसर पर यहाँ पर तीर्थयात्रियों की जबरदस्त भीड़ होती है। इस अवसर पर यहाँ मेला भी लगता है।

ब्रह्मयोनि पहाड़ी:–इस पहाड़ी की चोटी पर चढ़ने के लिए 400 सीढ़ियों को पार करना होता है। इसके शिखर पर भगवान शिव का मंदिर है। यह मंदिर विशाल बरगद के पेड़ के नीचे स्थित है। जहाँ पिण्डदान किया जाता है। इस स्थान का उल्लेख रामायण में भी किया गया है। दंतकथाओं पर विश्वास किया जाए तो पहले फल्गु नदी इस पहाड़ी के ऊपरी से बहती थी। लेकिन देवी सीता के शाप के प्रभाव से अब यह नदी पहाड़ी के नीचे से बहती है। यह पहाड़ी हिन्दूओं के लिए काफी पवित्र तीर्थ स्थानों में से एक है। यह मारनपुर के निकट है।

बराबर गुफाः– यह गुफा गया से 20 किमी0 उत्तर में स्थित है। इस गुफा तक पहुँचने के लिए 7 किमी0 पैदल और 10 किमी0 रिक्शा या तांगा से चलना होता है। यह गुफा बौद्ध धर्म के लिए महत्वपुर्ण है। यह बराबर और नागार्जुनी श्रृंखला के पहाड़ पर स्थित है। इस गुफा का निर्माण बराबर और नागार्जुनी पहाड़ी के बीच सम्राट अशोक और उनके पोते दशरथ के द्वारा की गई है। इस गुफा का उल्लेख इ0 एम0 फोस्टर की पुस्तक "ए पैसेट टू इंडिया" में भी किया गया है। इन गुफाओं में से 7 गुफाएँ भारतीय पुरातत्व विभाग की देखरेख में है। बराबर गुफाएं, चार मुख्य गुफाओं का एक समूह है, जो बराबर पहाड़ियों पर स्थित है। बराबर की गुफाएं चट्टानों को काटकर बनाई गई यह प्राचीन यह हमें मौर्य सम्राज्य के शासन काल में ले जाती है।

बराबर की गुफाएं में सभी गुफाएं बौद्धिक गुफाएं है, लेकिन बराबर में जैन एवं हिंदु धर्म से जुड़ी कई मूर्तियाँ भी देखने को मिलता है। बराबर की गुफाएं में चार मुख्य गुफाएं है, लोमस ऋषि गुफा, सुदामा, करण चौपर और विश्व जोपरी गुफा। बराबर की गुफाएं बौद्ध भिक्षु के साथ–साथ जैन भिक्षु का भी वास स्थल है।

दुर्लभ पीपल वृक्ष (मेन मंझार):–कोटेश्वरनाथ मंदिर से 300 मीटर उत्तर में दुर्लभ प्रजाति का पीपल वृक्ष है। दूर देश से वैज्ञानिक इस पर शोध करने आते है। श्रद्धालुओं के लिए यह कौतुक का विषय है क्योंकि वृक्ष की सभी शाखाएँ दक्षिण के तरफ ऊपर से नीचे आ जमीन को छूती है। (मानों भगवान शिव को प्रणाम कर रही है।) फिर ऊपर जाती है।

बोधगयाः– बोधगया बौद्ध धर्म की राजधानी है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

जिस पीपल वृक्ष के नीचे भगवान सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ था वो बोधिवृक्ष बौद्ध आस्था का केन्द्र है।

रामशिला पहाड़ीः– गया के दक्षिण पूर्व की ओर स्थित रामशिला हिल को सबसे पवित्र स्थान माना जाता है क्योंकि यह माना जाता है कि भगवान राम ने पहाड़ी पर "पिंड" की पेशकश की थी। पहाड़ी का नाम भगवान राम से जुड़ा है। प्राचीनकाल से संबंधित कई पत्थर की मूर्तियाँ पहाड़ी के आसपास के स्थानों पर देखी जा सकती है। जो कि बहुत पहले के समय से कुछ पूर्व संरचनाओं या मंदिरों के अस्तित्व का सुझाव देती है। पहाड़ी की चोटी पर स्थित मंदिर जिसे रामेश्वर या पातालेश्वर मंदिर कहा जाता है। मूल रूप से 1014 ई0 में बनाया गया था, लेकिन सफल अवधि में कई बहाली और मरम्मत से गुजरा। मंदिर के सामने हिन्दू भक्तों द्वारा अपने पूर्वजों के लिए पितृपक्ष के दौरान "पिंड" चढ़ाया जाता है।

प्रेतशिला पहाड़ीः– रामशिला पहाड़ी से लगभग 10 किमी0 दूर है। पहाड़ी के नीचे ब्रह्म कुण्ड स्थित है। इस तालाब में स्नान करने के बाद लोग "पिण्ड दान" के लिए जाते है। पहाड़ की चोटी पर इंदौर की रानी, आहिल्याबाई ने 1787 में एक मंदिर बनाया था। जिसे आहिल्याबाई मंदिर के नाम से जाना जाता था। यह मंदिर हमेशा अपनी अनूठी वास्तुकला और शानदार मूर्तियों के कारण पर्यटकों के लिए एक आकर्षण रहा है।

सीता कुण्डः– विष्णुपद मंदिर के विपरीत तरफ सीताकुण्ड फल्गु नदी के दूसरे किनारे पर स्थित है। इस स्थान को दर्शाते हुए एक छोटा सा मंदिर है। जहाँ सीता माता ने अपने ससुर का "पिण्डदान" किया था।

डुंगेश्वरी मंदिर/डुंगेश्वरी पहाड़ीः– गौतम सिद्धार्थ ने अंतिम आराधना के लिए बोधगया जाने से पहले 6 साल तक इस स्थान पर ध्यान किया था। बुद्ध के चरण को बनाने के लिए दो छोटे मंदिर बनाए गए है। कठोर तपस्या को याद करते हुए एक स्वर्ण क्षीण बृद्ध मूर्तिकला गुफा मंदिरों में से एक में और एक बड़ी (लगभग 6 फीट ऊँची) बुद्ध की प्रतिमा दूसरे में विहित है। गुफा मंदिर के अन्दर एक हिन्दू देवी–देवता डुंगेश्वरी को भी रखा गया है।

थाई मठ, बोधगयाः– थाई मोनास्ट्री बोधगया का सबसे पुराना विदेशी मठ है। जो कि सजावटी रीगल थाई स्थापत्य शैली में निर्मित है। बाहरी और साथ ही आंतरिक की भव्यता बेहद विस्मयकारी है। मंदिर सामने आँगन में एक शांत पूल के ऊपर लाल और सुनहरे मणि की तरह दिखाई देता है। बुद्ध के जीवन को दर्शाती भिति चित्रों के साथ शानदार बुद्ध की मूर्ति और कुछ आधुनिक घटनाओं जैसें कि शैली में चित्रित पेड़ लगाने का महत्व पूरी तरह से अद्भूत है। यह बोधगया में महाबोधि मंदिर के बगल में स्थित है। घुमने का समय सुबह 7:00 से दोपहर 12:00, दोपहर 02:00 से शाम 6:00 तक।

धर्म चक्रः– 200 क्विंटल लोहे से बना धर्म चक्र पर्यटकों में चर्चा का विषय रहा है कहा जाता है कि इस चक्र को घुमाने पर पापों से मुक्ति मिल जाती है।

सुजाता गढ़ से दक्षिण धर्मारण्य है, जो हिन्दू और बौऋ दोनों का पवित्र स्थल माना जाता है। आधुनिक बकरौर में अनेक बौद्ध मन्दिर भी है, जिनमें तिब्बती बौद्ध मन्दिर प्रसिद्ध है। आधुनिक बकरौर बौद्धों के लिए बोधगया के बाद दूसरा दर्शनीय स्थल बन गया है। पुरातत्व विभाग द्वारा आधुनिक बकरौर गाँव में एक स्तूप का उत्खन किया है, वह 8वीं शताब्दी के मगध के राजा देवपाल के द्वारा निर्मित करवाया गया था। इस स्तूप को द्वितीय चरण में गुप्त राजाओं के शासन काल में भी हुआ था। इस स्तूप का प्रदक्षिणा पथ लकड़ी से बनाया गया था। प्रथम चरण में सम्भवतः सम्राट अशोक के काल में इसका निर्माण हुआ होगा। लेकिन पुरातत्व विभाग के सूचना पट पर इस सम्राट के द्वारा निर्माण कार्य का उल्लेख नहीं है।

वर्तमान काल में सुजाता मन्दिर बौद्धों का दर्शनीय स्थल है। इस मन्दिर में भगवान बुद्ध भी अस्थि पंजर चेहरा में बैठे हुए दिखाए गए हैं, जिसके दाएँ सुजाता एवं बाएँ सुजाता की दासी पूर्णा हाथ जोड़े भगवान बुद्ध की वन्दना कर रही है। बकरौर में अन्य कई दर्शनीय स्थल है, जिन्हें हिन्दू परम्परा वाले लोग अपने धर्म के अन्तर्गत अपना लिए हैं, जब कि वास्तव में वह बौद्ध स्थल है। वास्तव में बुद्धकालीन सेनानी ग्राम ही आधुनिक बकरौर है, जहाँ सुजाता ने सिद्धार्थ गौतम को खीर दान की थी, तत्पश्चात् सिद्धार्थ गौतम को बोधिसत्व की प्राप्ति हुई और वे बुद्ध कहलाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 कुमार अमरेन्द्र, पुरातत्व और बिहार जयश्री प्रकाशन पटना, 2004
2. कॉलेश्वर राय, बिहार का इतिहास, किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद, 2006
3. गया डिस्ट्रीक्ट गजेटियर
4. बिहार राज्य अभिलेख
5. पितरों के लिए गया ष्वंपदपा श्रंहतंदष्अभिगमन 1 मार्च 2019

*****